A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

डिजिटल मीडिया के युग में ध्रुपद संगीत का प्रसार एवं महिला कलाकारों की भागीदारी

Anuj Pratap Singh
Researcher, Department of Music (Performing Arts), Banasthali Vidyapith, Rajasthan

Read the Article Online

OPEN ACCESS

Cite this Article

Published on 21 June, 2026

Singh, A.P. (2026). digital media ke yug mein dhrupad sangeet ka prasar evam mahila kalakaron ki bhagidari. Swar Sindhu, 14(1), 409-412.

सार

भारतीय शास्त्रीय संगीत की प्राचीन परंपरा में ध्रुपद शैली का विशेष महत्व है, जो अपनी गंभीरता, आध्यात्मिकता और शास्त्रीय अनुशासन के लिए जानी जाती है। परंपरागत रूप से यह शैली राजदरबारों, मंदिरों और सीमित सांस्कृतिक परिवेश तक ही सीमित रही, जिससे इसका व्यापक प्रसार संभव नहीं हो पाया। आधुनिक युग में डिजिटल मीडिया के विकास ने इस स्थिति को बदलते हुए ध्रुपद को वैश्विक मंच प्रदान किया है। इंटरनेट, सोशल मीडिया और ऑनलाइन संगीत प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से ध्रुपद संगीत अब विश्वभर के श्रोताओं तक सहज रूप से पहुँच रहा है। साथ ही, ऑनलाइन शिक्षण प्रणालियों ने गुरु-शिष्य परंपरा के साथ नए आयाम जोड़ते हुए इसे अधिक सुलभ बना दिया है। डिजिटल माध्यमों ने न केवल ध्रुपद के प्रचार-प्रसार को गति दी है, बल्कि इसमें महिलाओं की भागीदारी को भी सशक्त किया है, जो पहले सामाजिक एवं संरचनात्मक बाधाओं के कारण सीमित थी। शोधार्थी का विचार है कि डिजिटल युग ने ध्रुपद को एक लोकतांत्रिक स्वरूप प्रदान किया है, जहाँ प्रतिभा के आधार पर कलाकार अपनी पहचान स्थापित कर सकते हैं। इस प्रकार, डिजिटल मीडिया ध्रुपद संगीत के संरक्षण, प्रसार और समकालीन प्रासंगिकता को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

मुख्य शब्द *- ध्रुपद संगीत, डिजिटल मीडिया, महिला कलाकार, ऑनलाइन संगीत प्रसार, भारतीय शास्त्रीय संगीत*

प्रस्तावना

भारतीय शास्त्रीय संगीत की परंपरा विश्व की प्राचीनतम सांगीतिक परंपराओं में से एक है, जिसमें ध्रुपद शैली का विशेष स्थान है। ध्रुपद अपनी गंभीरता, आध्यात्मिकता तथा शास्त्रीय अनुशासन के कारण न केवल एक संगीत शैली है, बल्कि एक साधना-पद्धति भी है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह शैली राजदरबारों, मंदिरों तथा धार्मिक अनुष्ठानों से जुड़ी रही है, जिसके कारण इसकी प्रस्तुति सीमित परिवेश में ही संभव हो पाती थी। आधुनिक युग में जब वैश्वीकरण, तकनीकी विकास और संचार माध्यमों में तीव्र परिवर्तन हुआ, तब ध्रुपद संगीत को भी नए परिवेश में स्वयं को स्थापित करने की आवश्यकता पड़ी। इसी संदर्भ में डिजिटल मीडिया का उदय अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ है। डिजिटल प्लेटफॉर्म्स ने न केवल ध्रुपद के प्रचार-प्रसार को नया आयाम प्रदान किया है, बल्कि इसे वैश्विक स्तर पर पहुँचाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है इसके अतिरिक्त, डिजिटल माध्यमों ने इस परंपरागत पुरुष-प्रधान शैली में महिलाओं की भागीदारी को भी सशक्त बनाया है। शोधार्थी का विचार है कि डिजिटल युग ने ध्रुपद संगीत को एक लोकतांत्रिक स्वरूप प्रदान किया है, जहाँ प्रतिभा और साधना के आधार पर कोई भी कलाकार अपनी पहचान स्थापित कर सकता है।

शोध कार्यप्रणाली

शोध का स्वरूप एवं दृष्टिकोण: प्रस्तुत शोध पत्र में वर्णनात्मक (Descriptive), ऐतिहासिक (Historical) और विश्लेषणात्मक (Analytical) शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है, जिसके अंतर्गत पारंपरिक ध्रुपद गायन शैली पर आधुनिक डिजिटल मीडिया के प्रभाव का मूल्यांकन किया गया है।

प्रदत्त संग्रहण (Data Collection): शोध के उद्देश्य की पूर्ति हेतु गुणात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए पूर्णतः द्वितीयक आँकड़ों (Secondary Data) का उपयोग किया गया है; जिसमें प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाओं (जैसे 'Swar Sindhu', 'AEMR'), प्रामाणिक अकादमिक वेबसाइटों, संगीत अकादमियों के डिजिटल अभिलेखों और ऐतिहासिक साक्ष्यों से सामग्री संकलित की गई है।

विश्लेषण की विधि: संकलित की गई सामग्री का व्यवस्थित वैचारिक विश्लेषण (Conceptual Analysis) किया गया है, ताकि यह समझा जा सके कि कैसे आरपानेट (ARPANET) से शुरू हुआ तकनीकी सफर वर्तमान में यूट्यूब, स्पॉटीफाई और रील्स (Reels) जैसे माध्यमों से होता हुआ ध्रुपद के प्रसार में सहायक बना है।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) । Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

विशिष्ट संदर्भात्मक अध्ययन: इस पद्धति के अंतर्गत डागर व अन्य परंपराओं से जुड़ी समकालीन महिला कलाकारों (जैसे पेलवा नाइक, अमिता सिन्हा महापात्रा) और पूर्ववर्ती दिग्गजों (जैसे पद्मश्री असगरी बाई) के योगदान का डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के आलोक में विषय-परक (Thematic) अध्ययन किया गया है।

शोध का उद्देश्यपरक निष्कर्ष: अंतत:, पारंपरिक गुरु-शिष्य परंपरा की शुद्धता और डिजिटल युग की सुलभता (स्थान-स्वतंत्रता) के मध्य संतुलन का तार्किक व विश्लेषणात्मक संश्लेषण (Synthesis) करते हुए इस शोध को निष्कर्ष तक पहुँचाया गया है।

ध्रुपद संगीत का ऐतिहासिक एवं सांगीतिक स्वरूप

ध्रुपद शैली का विकास वैदिक कालीन सामगान से लेकर मध्यकालीन दरबारी संगीत तक क्रमिक रूप से हुआ है। यह शैली अपने स्थिर लय, गंभीर आलाप, और धैर्यपूर्ण प्रस्तुति के लिए जानी जाती है। ध्रुपद में शब्द, स्वर और भाव का संतुलित समन्वय होता है, जो इसे अन्य शैलियों से विशिष्ट बनाता है। गुरु-शिष्य परंपरा ध्रुपद के संवहन का मुख्य माध्यम रही है, जिसमें ज्ञान का संप्रेषण मौखिक एवं व्यवहारिक रूप से होता रहा है। इस प्रणाली में दीर्घकालीन साधना, अनुशासन तथा समर्पण की आवश्यकता होती है। शोधार्थी का विचार है कि ध्रुपद की यह पारंपरिक संरचना, जहाँ एक ओर इसकी शुद्धता को बनाए रखती है, वहीं दूसरी ओर आधुनिक युग में इसके प्रसार में बाधा भी उत्पन्न करती है, क्योंकि यह व्यापक जनसामान्य तक आसानी से नहीं पहुँच पाती।

डिजिटल मीडिया: अवधारणा एवं विकास

डिजिटल मीडिया से आशय उन सभी तकनीकी माध्यमों से है, जिनके द्वारा सूचना, कला एवं ज्ञान का आदान-प्रदान इंटरनेट के माध्यम से किया जाता है। इसमें सोशल मीडिया, ऑनलाइन म्यूजिक प्लेटफॉर्म्स तथा डिजिटल मार्केटिंग शामिल हैं। डिजिटल मीडिया के विकास ने संचार के पारंपरिक तरीकों को पूरी तरह परिवर्तित कर दिया है। संगीत के क्षेत्र में भी इसका प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। डिजिटल मीडिया का इतिहास केवल तकनीक का विकास नहीं है, बल्कि यह हमारे बात करने, सोचने या दुनिया को देखने के तरीके में आया एक क्रांतिकारी बदलाव है। प्राचीन काल में भारत में ताड़पत्र पांडुलिपि (ताड़ वृक्ष के सूखे हुए पत्तों पर लिखे गये ग्रंथ), ताम्र पत्र (तांबे की कागज जैसी पतली पत्तियों) इत्यादि हुआ करती थीं। परंतु इनका उपयोग बहुत ही संकुचित क्षेत्रों में किया जाता था, जैसे राज पत्र या शाही आदेश लिखने, ग्रंथ लिखने इत्यादि। साथ ही ये जन सामान्य के अभिगम से दूर था। इसके कई वर्षों बाद, सन् 1436 में प्रिन्ट मीडिया के आविष्कार ; तथा 1600 ई. में समाचार पत्र के आविष्कार से जन स्तर पर क्षेत्रीय व देश-विदेश की खबरें बहुत ही आसानी से, पुराने साधनों से अपेक्षाकृत कम लागत में पहुचाई जाने लगीं।

सन् 1969 में इन्टरनेट की नींव आरपानेट (ARPANET) के रूप में रखी गई, जो कि दो कंप्युटरों के बीच पहली बार जानकारी का आदान प्रदान कराने में सक्षम हुआ। इसी के साथ सोशल मीडिया का आगमन सन् 2004-2005 में होने से सामान्य लोगों के पास अपने विचारों को व्यक्त करने का मंच मिला। शोधार्थी का विचार है कि डिजिटल मीडिया केवल एक तकनीकी उपकरण नहीं है, बल्कि यह सांस्कृतिक पुनरुत्थान का माध्यम भी बन गया है, जिसके द्वारा पारंपरिक कलाओं को पुनः जीवित किया जा सकता है।

डिजिटल मीडिया के मध्यम से ध्रुपद का प्रसार

डिजिटल मीडिया ने भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रसार के स्वरूप को पूरी तरह बदल दिया है। पहले जहाँ ध्रुपद संगीत केवल दरबारों, मंदिरों एवं विशिष्ट संगीत मंचों तक सीमित था, वहीं आज यह इंटरनेट एवं ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से वैश्विक श्रोताओं तक पहुँच रहा है। विशेष रूप से YouTube, Facebook और Instagram जैसे प्लेटफॉर्म ने कलाकारों को अपनी प्रस्तुतियाँ साझा करने तथा श्रोताओं से प्रत्यक्ष संवाद स्थापित करने का सशक्त माध्यम प्रदान किया है। इन माध्यमों के द्वारा संगीत के प्रचार में लागत कम हुई है तथा वैश्विक स्तर पर पहुँच बढ़ी है। आज यूट्यूब पर कई सारे अधिक पुराने कलाकारों जैसे असगरी बाई, अलका नंदी, अन्नपूर्णा देवी इत्यादि के गायन, वादन की रेकॉर्डिंग्स प्राप्त होती हैं, जो कि किसी कोषागार के समान अमूल्य हैं। इनके माध्यम से हमें वर्तमान व थोड़े पूर्ववर्ती समय की विधा का अंतर, पुरानी पारंपरिक बंदिशों का जीवंत स्रोत प्राप्त होता है। बदलते समय के साथ समाज, तथा जीवन के विभिन्न क्षेत्रों की गति में अधिक वृद्धि हुई है; और डिजिटल मीडिया के उपयोग के साथ ही इस तेजी से बदलती जीवनशैली के चलते सामान्य जन की ध्यान-अवधि (Attention Span) में कमी आई है, जिसके फलस्वरूप डिजिटल मीडिया के प्रमुख संचालक संगठनों जैसे इंस्टाग्राम, फेस्बुक, यूट्यूब इत्यादि ने रील्स (Reels) के माध्यम से अल्पकालीन वीडियोज़ से लोगों को कम समय में विषय वस्तु काफी हद तक पहुचाने में सफलता प्राप्त की है।

इन्हीं अल्पकालीन वीडियोज़ के माध्यम से संगीत श्रोता विभिन्न ऑनलाइन मंचों पर ध्रुपद सुनकर उससे परिचित हो सकते हैं तथा ऐसे ही मंचों के माध्यम से कई नए कलाकार ख्याति व सम्मान प्राप्त करते हैं। इनके अलावा विभिन्न म्यूज़िक स्ट्रीमिंग प्लाटफॉर्म्स जैसे एप्पल म्यूजिक,स्पौटीफाय, जिओ सावन, गाना. कॉम इत्यादि पर विभिन्न ध्रुपद कलाकारों की रिकॉर्डिंग्स प्राप्त होती हैं, जिन्हें हम किसी भी समय सुन सकते हैं। इन प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से संगीत की उपलब्धता सरल हुई है और श्रोताओं को विविधता का अनुभव प्राप्त हुआ है। डिजिटल मीडिया ने वास्तव में ध्रुपद जैसी विधा को श्रोताओं तक पहुचाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स ने संगीत को "स्थान-निर्भर" से "स्थान-स्वतंत्र" बना दिया है, जिससे ध्रुपद जैसे गूढ़ संगीत भी वैश्विक स्तर पर सुलभ हो गए हैं। इनके साथ ही डिजिटल मार्केटिंग रणनीतियों ने भी इस प्रक्रिया को गति दी है, जिससे ध्रुपद संगीत के प्रति नई पीढ़ी का आकर्षण बढ़ा है।[1] इन प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से:

- कलाकार सीधे श्रोताओं से जुड़ सकते हैं
- वैश्विक स्तर पर पहचान बना सकते हैं
- अपने संगीत का संरक्षण कर सकते हैं

शोधार्थी का विचार है कि डिजिटल मीडिया ने ध्रुपद को "सीमित परंपरा" से "वैश्विक सांस्कृतिक धरोहर" में परिवर्तित कर दिया है।

ऑनलाइन शिक्षण और ध्रुपद का विस्तार

डिजिटल युग में संगीत शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। अब ध्रुपद संगीत की शिक्षा केवल पारंपरिक गुरु-शिष्य परंपरा तक सीमित नहीं रही, बल्कि ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से विश्वभर में सुलभ हो गई है। Dhrupad Music Academy[2] तथा Rishima Music जैसे संस्थानों ने ध्रुपद संगीत के ऑनलाइन पाठ्यक्रम उपलब्ध कराकर इसे वैश्विक स्तर पर पहुँचाने का कार्य किया है।[3] **ध्रुपद केंद्र ग्वालियर** ने कोरोना महामारी के काल में ऑनलाइन माध्यम से कई विद्यार्थियों को ध्रुपद प्रशिक्षण दिया। साथ ही केंद्र के माध्यम से कई कार्यक्रम ऑनलाइन ब्रोडकास्ट (Online Broadcast) के माध्यम से विभिन्न ऑनलाइन व सोशल मीडिया मंचों पर प्रसारित किए जाते आए हैं, जिन्हें देश-विदेश के विभिन्न श्रोता सुनते हैं, इस प्रकार ध्रुपद के प्रचार प्रसार में सोशल मीडिया व ऑनलाइन शिक्षण आधुनिक युग में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।[4]

देश के विभिन्न कार्यक्रम, जैसे तानसेन समारोह, ध्रुपद मेला बनारस, दरबार फेस्टिवल (लंदन), विरासत देहरादून, NCPA मुंबई, रज़ा फाउंडेशन दिल्ली, सप्तक अहमदाबाद के साथ अन्य कई ऐसे मंच देश में नियमित रूप से ध्रुपद की प्रस्तुतियाँ संयोजित कराते हैं, जो कि इन मंचों के द्वारा ऑनलाइन प्रसारित की जाती हैं। इससे न केवल नए विद्यार्थियों को अवसर मिला है, बल्कि महिला शिक्षार्थियों की भागीदारी भी बढ़ी है, जो पहले सामाजिक एवं भौगोलिक सीमाओं के कारण इस क्षेत्र में प्रवेश नहीं कर पाती थीं।

ध्रुपद में महिला कलाकारों की भूमिका

भारतीय शास्त्रीय संगीत में महिलाओं की भागीदारी प्राचीन काल से रही है, किंतु ध्रुपद शैली में उनकी उपस्थिति अपेक्षाकृत कम रही है। इसका मुख्य कारण इसका पुरुष-प्रधान होना एवं कठोर साधना की आवश्यकता रही है। आधुनिक समय में यह स्थिति बदल रही है और कई महिला कलाकार इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। जैसे कि Pelva Naik, जो डागर परंपरा से संबंधित हैं और आधुनिक ध्रुपद प्रस्तुति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।[5] इसी प्रकार Amita Sinha Mahapatra, जो गुंडेचा बंधुओं की शिष्या हैं, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ध्रुपद का प्रचार कर रही हैं।[6] ध्रुपद के प्रोत्साहन में अन्य कई महिलायें हैं, जिनका ध्रुपद की लोकप्रियता की वृद्धि में महत्वपूर्ण स्थान है। ध्रुपद की प्रसिद्ध कलाकार असगरी बाई को ध्रुपद विधा में उनकी गायिकी के लिए कई पुरस्कार प्राप्त हुए, जिनमें तानसेन सम्मान, शिखर सम्मान, संगीत नाटक अकादमी शामिल है। साथ ही उन्हें भारत सरकार द्वारा सन् 1990 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया। अतः उनकी ओजपूर्ण प्रस्तुतियों व इन उपलब्धियों से भविष्य में ध्रुपद विधा में महिलाओं के लिए स्थान की संभावना और सशक्त हुई। इनके अतिरिक्त अलका नंदी, अशोका धर तथा मधु भट्ट तैलंग जैसी कलाकारों ने भी इस शैली के संरक्षण एवं प्रसार में अत्यधिक योगदान दिया है।

चुनौतियाँ और परिवर्तनशील परिदृश्य

ध्रुपद संगीत ऐतिहासिक रूप से पुरुष-प्रधान रहा है, जिसके कारण महिलाओं को इस क्षेत्र में अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। गुरु-शिष्य परंपरा में सीमित अवसर, सामाजिक प्रतिबंध तथा मंचीय अवसरों की कमी इसके प्रमुख कारण रहे हैं। हालाँकि, वर्तमान समय में स्थिति में परिवर्तन देखा जा रहा है। प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना, डिजिटल माध्यमों का विस्तार एवं सामाजिक जागरूकता के कारण महिला कलाकारों की

भागीदारी में वृद्धि हुई है। समकालीन कलाकारों का मानना है कि संगीत की साधना में लिंग भेद गौण हो जाता है और केवल कला ही महत्वपूर्ण होती है। शोधार्थी का विचार है कि चुनौतियों के बावजूद डिजिटल मीडिया ध्रुपद संगीत के लिए एक अवसर है, जिसे संतुलित दृष्टिकोण के साथ अपनाना आवश्यक है।

डिजिटल मीडिया और महिला भागीदारी का संबंध

मध्यकाल में कई विदेशी आक्रमणों के कारण देश में महिलाओं की सामाजिक स्थिति खराब हुई। बदलते समय के साथ बदलते समाज में शिक्षा की वृद्धि के साथ महिलाओं की स्वतंत्रता को समाज में स्थान प्राप्त होने लगा। डिजिटल मीडिया के आगमन से महिलाओं की कला में संभावना बहुत अधिक बढ़ी है, क्योंकि इंटरनेट व डिजिटल माध्यम निष्पक्ष रूप से सभी के लिए लभ्य है तथा इसका प्रभाव महिलाओं की सामाजिक व सांगीतिक स्थिति पर सकारात्मक रूप से हुआ। डिजिटल मीडिया ने महिला कलाकारों के लिए एक स्वतंत्र मंच प्रदान किया है, जहाँ वे बिना किसी मध्यस्थ के अपनी कला को प्रस्तुत कर सकती हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के माध्यम से वे अपनी पहचान स्थापित करने के साथ-साथ श्रोताओं से सीधे जुड़ पा रही हैं। इसके परिणामस्वरूप, ध्रुपद जैसी पारंपरिक शैली में भी महिलाओं की भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है और वे वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बना रही हैं

निष्कर्ष

अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि डिजिटल मीडिया ने ध्रुपद संगीत के विकास, संरक्षण एवं प्रसार में एक निर्णायक और परिवर्तनकारी भूमिका निभाई है। परंपरागत रूप से सीमित सांगीतिक परिवेश में प्रतिष्ठित यह शैली आज डिजिटल मंचों के माध्यम से वैश्विक सांगीतिक परिदृश्य में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा रही है। इंटरनेट, सोशल मीडिया और ऑनलाइन शिक्षण पद्धतियों ने ध्रुपद को भौगोलिक एवं सामाजिक सीमाओं से मुक्त कर एक व्यापक श्रोता-वर्ग तक पहुँचाया है।

इस परिवर्तनशील प्रक्रिया में महिला कलाकारों की बढ़ती भागीदारी एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक बदलाव का द्योतक है। जहाँ पूर्व में सामाजिक प्रतिबंध, अवसरों की कमी एवं संरचनात्मक बाधाएँ उनके मार्ग में अवरोध थीं, वहीं डिजिटल माध्यमों ने उन्हें अभिव्यक्ति, प्रस्तुति और पहचान का स्वतंत्र मंच प्रदान किया है। इससे न केवल ध्रुपद की परंपरा में संतुलन और समावेशिता आई है, बल्कि इस शैली के भविष्य के लिए एक सशक्त आधार भी निर्मित हुआ है। साथ ही, यह भी आवश्यक है कि इस तीव्र विस्तार के बीच ध्रुपद की मूल आत्मा—उसकी शास्त्रीय शुद्धता, गाम्भीर्य, आलाप-प्रधानता तथा साधना-आधारित स्वरूप—अक्षुण्ण बनी रहे। डिजिटल माध्यमों के कारण प्रस्तुति में सरलीकरण, संक्षिप्तीकरण एवं त्वरित उपभोग की प्रवृत्ति बढ़ने की संभावना रहती है, जो इस गूढ़ शैली की गहराई को प्रभावित कर सकती है। अतः कलाकारों, गुरुओं और संस्थानों का दायित्व है कि वे परंपरा और आधुनिकता के मध्य संतुलन स्थापित करते हुए इन साधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करें।

अंततः यह कहा जा सकता है कि डिजिटल युग में ध्रुपद का भविष्य परंपरा और नवाचार के समन्वित दृष्टिकोण पर निर्भर करता है। यदि इस दिशा में संतुलित प्रयास किए जाएँ, तो ध्रुपद न केवल अपनी मौलिकता को सुरक्षित रखेगा, बल्कि वैश्विक स्तर पर एक सशक्त, जीवंत और प्रासंगिक सांगीतिक धरोहर के रूप में निरंतर विकसित होता रहेगा, जिसमें महिला कलाकारों की सक्रिय और सृजनात्मक भागीदारी इसकी प्रगति को नई दिशा प्रदान करेगी।

संदर्भ

1. Mahajan, M., & Dhalia, A. (2025). Role of digital platforms in promoting Indian classical music: A study of social media, online music platforms and digital marketing strategies. Swar Sindhu, 13(1), 45-52
2. Dhrupad Music Academy. (n.d.). Dhrupad Music Academy. https://dhrupadmusicacademy.com/
3. Bahadoorsingh, R. (n.d.). Rishima Music. https://www.rishimamusic.com/
4. Yadav, R. K., Mishra, R., & Kumar, A. (2025). The role of internet in Hindustani classical music singing performances globally in present scenario. AEMR, 16, 111–118. https://doi.org/10.30819/aemr.16-9
5. Pushpa. (2025). Bharatiya sangit main striyon ki bhumika. International Journal of Arts & Education Research, 14(1), 44-48.
6. Sangeet Sabha. (n.d.). Amita Sinha Mahapatra. https://sangeetsabha.com/artists/amita-sinha-mahapatra/